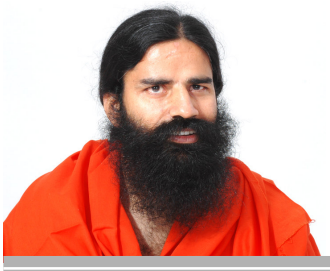

आर्थिक आजादी से व्यवस्था-परिवर्तन

भारत स्वाभिमान के मुख्य 3 मुद्दे – 400 लाख करोड़ रुपये का कालाधन देश को दिलाना, भ्रष्टाचार को मिटाना तथा आर्थिक आजादी के सिद्धान्त पर चलकर व्यवस्था परिवर्तन करके सबको आर्थिक व सामाजिक न्याय दिलाना।

आर्थिक आजादी व व्यवस्था-परिवर्तन के मुख्य मुद्दे –

1. **आर्थिक आजादी** – हमें धार्मिक व राजनैतिक आजादी तो मिल गई लेकिन आर्थिक आजादी न मिलने के कारण देश के 99 प्रतिशत लोगों के साथ अन्याय हो रहा है तथा टैक्स के नाम पर लूट, विदेशी कंपनियों द्वारा लूट, राष्ट्रीय सम्पदाओं की लूट, पढ़ाई, दवाई व मंहगाई आदि के नाम पर लूट तथा बजट में भी पक्षपात लूट व शोषण हो रहा है, कालेधन के रूप में देश का लगभग 400 लाख करोड़ तो लुट चुका है तथा अभी भी ये लूट जारी है। कालेधन के रूप में देश का लगभग 400 लाख कराड़ रुपये लुट चुका है तथा अभी भी ये लूट जारी है। हमें आर्थिक आजादी के सिद्धान्त पर चलकर 32 प्रकार के सभी टैक्सों को समाप्त करके मात्र 2 प्रतिशत ट्रांजिक्शन टैक्स लगवाना है। इससे देश के सर्वांगीण विकास व सुरक्षा के लिए लगभग 30 लाख करोड़ रुपये धन तो मिलेगा ही साथ ही महंगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार, कालाधन, कालेधन्धे व नकली करेंसी आदि से भी एक साथ मुक्ति मिलेगी। भारत की मुद्रा व अर्थ व्यवस्था विश्व में सबसे शक्तिशाली होगी, भारत महाशक्ति बनेगा। आर्थिक आजादी का सिद्धान्त ही व्यवस्था परिवर्तन का आधार होगा। सबको आर्थिक व सामाजिक न्याय मिलेगा। **नेता एवं सरकारी तन्त्र का हमारे जीवन में 99% हस्तक्षेप खत्म होने से सब सुखी होंगे। भारत या चीन जो भी इस नये सिंगल ट्रांजिक्शन टैक्स सिस्टम को पहले लागु कर लेगा, वही दुनियाँ में सुपर पावर होगा। भारत को सुपर पावर बनाने के लिए इस नई कर प्रणाली को देश में तुरन्त लागु करना चाहिए तथा अमेरिका व यूरोप आदि के दिवालिया होने से पहले वहाँ से अपना लाखों करोड़ रुपये का कालाधन भी तत्काल वापस लाने की आवश्यकता है। यदि वक्त रहते हमने ये निर्णय नहीं लिए तो देश की बहुत बड़ी हानि होगी।**

इस नई कर प्रणाली या न्यायपूर्ण अर्थ व्यवस्था या आर्थिक आजादी के मुख्य चार लाभ–

पहला लाभ– महंगाई कम होगी। गैस, डीज़ल, पैट्रोल पर लगभग 50% तथा हमारे प्रयोग की लगभग सभी वस्तुओं पर 30% से 50% टैक्स होता है। ये सभी कर समाप्त होने पर गैस, डीजल व पेट्रोल आदि 40 से 50% तथा साईकल, मोटर साईकल व कारादि से लेकर साबुन-शैम्पू, वाशिंग

पाउडर व जूता-चप्पल आदि सभी वस्तुएँ 25% से 50% सस्ती होंगी। महंगाई के चार मुख्य कारण हैं–(1) अधिक कर (टैक्स) (2) उत्पादन में कमी (3) उत्पादन में अधिक लागत (4) जमाखोरी या वायदा आदि। व्यवस्था परिवर्तन की सप्त-नीतियों से यह महंगाई पूरी तरह खत्म हो जायेगी।

दूसरा लाभ– सब लोग धनवान् होंगे। जब सब टैक्स खत्म हो जायेंगे तथा मात्र 2% ही ट्रांजेक्शन होगा तो सभी चीजें सस्ती होने से सबकी बचत बढ़ेगी पैसा बचेगा तथा अधिक कर नहीं देने से भी सभी टैक्स चुकाने वाले नागरिक भी धनवान् बनेंगे।

तीसरा लाभ– देश धनवान् या आर्थिक महाशक्ति बनेगा। 50 रुपये से अधिक के नोट वापस लेने से तथा मात्र 2% कर होने से देश की आन्तरिक अर्थ-व्यवस्था का कालाधन पूरी तरह खत्म हो जायेगा तथा टैक्स चोरी आदि पूरी तरह खत्म होगी तथा देश के सभी नागरिक सच्चाई व ईमानदारी से जी सकेंगे। दुनियाँ के सभी धनवान् देश, कम्पनियाँ, धनवान् व्यक्ति तथा हमारे प्रवासी भारतीय (एन.आर.आई.) भारत में ही अपना निवेश करेंगे। अपने राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर हम एफ. डी.आई. अपनी शर्तों के अनुसार लेंगे, उसके बावजूद भी हमारा एफ.डी.आई. प्रतिशत बढ़ेगा। एक तरह से भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा सच्चाई के रास्ते पर चलने वाला टैक्स हैवन देश होगा। पूरी दुनियाँ की पूंजी हमारे यहां आयेगी। विदेशों में जमा कालेधन को राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित करके उसको देश में लायेंगे। इन सब के कारण भारत दुनियाँ की सबसे बड़ी अर्थ-व्यवस्था का केन्द्र बनेगा। एक तरफ पूरी दुनियाँ और एक तरफ अकेला भारत, कहीं अधिक ताकतवर होगा तथा हमारी मुद्रा का मूल्य भी डॉलर व पोंड के बराबर या उससे अधिक होगा। देश, देश के नागरिक व हमारी मुद्रा की दुनियाँ में इज़्ज़त होगी। **कुछ ही वर्षों में IMF, वर्ल्ड बैंक, UNO, WTO, WHO का मुख्यालय भारत में होगा और भारत के नेतृत्व में एक आदर्श विश्व का उदय होगा। पूरी दुनियाँ में समान रूप से न्यायपूर्ण समृद्धि व शान्ति कायम होगी। अपनी गलत आर्थिक नीतियों व गलत कानून व्यवस्था के कारण आज हम दुनियाँ के सामने दयनीय व कमजोर बने हुए हैं। बड़े नोट जो कि लगभग 93% हैं व कैश ट्रांजेक्शन खत्म होने से भ्रष्टाचार के सभी स्त्रोत बन्द हो जायेंगे तथा भ्रष्टाचार व कालाधन खत्म हो जाने से देश आर्थिक महाशक्ति बनेगा।**

चौथा लाभ– सबको आर्थिक आजादी व आर्थिक न्याय मिलेगा। देश की विकास योजनाओं व सुरक्षा के लिए पूरा धन मिलेगा। सबके मन में एक प्रश्न स्वाभाविक रूप से पैदा होगा कि आखिर भारत स्वाभिमान के व्यवस्था परिवर्तन के सात मुद्दों के लिए अर्थात् ग्रामोत्थान समान शिक्षा व चिकित्सा, जल-प्रबन्धन, कचरा-प्रबन्धन व स्टेट फन्डिंग इलैक्शन (सरकारी खर्च पर चुनाव) आदि के लिए पैसा कहां से आयेगा? हमारा उत्तर है–भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार प्रतिदिन ढ़ाई लाख करोड़ तथा प्रतिवर्ष लगभग 750 लाख करोड़ रुपये का बैंकों से ट्रांजेक्शन होता है। इस पर तत्काल 2% टैक्स लगाने पर विकास के लिए 15 लाख करोड़ रुपये तथा अगले ही वर्ष 50 रुपये से अधिक के नोट वापस लेने पर अनअकाउन्टिड मनी खत्म हो जायेगा तथा बैंकों से ट्रांजेक्शन लेन-देन कम से कम दो गुणा होने से टैक्स भी लगभग 30 लाख करोड़ रुपये मिलेगा, जिससे देश के विकास के

लिए धन की कमी नहीं होगी तथा बड़ी मुद्रा में नकद लेन-देन (कैश ट्रांजेक्शन) खत्म हो जाने व बड़े नोटों के बन्द हो जाने से भ्रष्टाचार भी स्वत: ही समाप्त हो जायेगा क्योंकि छोटे नोटों को लाखों-करोड़ों की मात्रा में छिपाना, लेना-देना व ट्रांसपोर्ट करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है जैसे सुई को तो छिपा सकते हैं, हाथी या हवाईजहाज को नहीं छिपा सकते।

आर्थिक आजादी के मुख्य सिद्धान्त–

1. सभी प्रकार के करों को समाप्त करके (आयात करों- इम्पोर्ट ड्यूटी को छोड़कर) मात्र 2% बैंक ट्रांजिक्शन टैक्स (BTT) लगाना तथा इस टैक्स में केन्द्र, राज्य, स्थानीय निकाय व बैंक के लिए क्रमश: अनुमानित 0.7%, 0.6%, 0.35% एवं 0.35% हिस्सा विभाजित करना।
2. 50 से ऊपर के बड़े नोट वापस लेना तथा गाँव के आम व गरीब लोग जो छोटी मुद्रा (कैश) में व्यवहार करते हैं, उस पर कोई टैक्स नहीं लगाना।
3. सरकार को एक कानून बनाना होगा कि दो या पाँच हजार से अधिक का नकद लेन-देन वैध नहीं होगा। सभी दुकानों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का लेन-देन चैक, ड्राफ्ट या डेबिट कार्ड से ही होगा।

आर्थिक आजादी से जुड़े कुछ प्रश्न–

प्रश्न– सप्लाई चैन लम्बी होने पर उत्पादों पर अधिकतम कितना टैक्स लगेगा?

उत्तर– बाजार में कोई भी उत्पाद C&F, होल सेलर व रिटेलर से होता हुआ ग्राहक के पास पहुँचता है, इस प्रक्रिया में अधिकतम 3 से 4 व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। अत: प्रथम वर्ष में ज्यादा से ज्यादा 6 से 8% तथा कुछ वर्षों में अधिकतम मात्र 3 से 4% ही टैक्स रह जायेगा।

प्रश्न– वर्तमान में लगभग 2 लाख रुपये तक कमाने वालों तथा किसानों पर कोई टैक्स नहीं लगता। क्या ट्रांजेक्शन टैक्स लागू होने पर इनको भी टैक्स देना होगा?

उत्तर– पहली बात तो हर आदमी जिन उत्पादों का प्रयोग कर रहा है उस पर लगभग 50% की बचत होगी तथा टैक्स मात्र 2% ही लगेगा। रही बात किसानों की- उनको गेहूँ, चावल व गन्ना आदि बेचने पर कोई टैक्स नहीं लगेगा बल्कि जो खरीदेगा उसे 2% टैक्स देना होगा। क्योंकि ये ट्रांजेक्शन टैक्स खरीदने या लेने वाले पर ही लगेगा, देने वाले पर नहीं। साथ ही अन्य सब टैक्स खत्म होने पर किसानों को सब चीजें खाद, बीज, ट्रैक्टर, डीजल व गैस आदि अन्य घरेलू सामान पर 30 से 50% की बचत होगी।

प्रश्न– व्यापारी, नौकरी-पेशा करने वाले व अन्य व्यावसायिक लोगों को सालभर में औसत कितना टैक्स देना होगा?

उत्तर– वर्तमान कर प्रणाली में वैट 4 से 12%, एक्साइज लगभग 16%, सर्विस टैक्स 10%, इन्कम टैक्स 30%, स्टाम्प ड्यूटी 10% व इसी प्रकार रोड़ टैक्स, टोल टैक्स, हाउस टैक्स, वाटर टैक्स व एजुकेशन

फेस आदि के नाम पर कुल लगभग 30 से 50% टैक्स देने पड़ते हैं। तो ट्रांजिक्शन टैक्स लागू होने पर मात्र 2% ही टैक्स देना होगा और बाद में तो यह और भी 2% से घटकर 1% से भी कम ही रह जायेगा। इस प्रकार इस नई कर प्रणाली से गरीब-अमीर सब देशवासियों को लाभ मिलेगा।

प्रश्न– वर्तमान कर प्रणाली में जी.डी.पी. का कितना प्रतिशत टैक्स कलैक्शन होता है?

उत्तर– अमेरिका में जी.डी.पी. का लगभग 29%, यू.के. में 39%, स्वीडन में 54% तथा भारत में लाखों करोड़ रुपये इन टैक्स अधिकारियों पर खर्च करके तथा 32 प्रकार के टैक्स लगाकर देशभर से कुल लगभग 12 लाख करोड़ का कर आता है, जो हमारी जी.डी.पी. का लगभग 18% होता है। नई कर प्रणाली से प्रथम वर्ष कम से कम 15 लाख करोड़ रुपये तथा दूसरे ही वर्ष 30 लाख करोड़ से अधिक ही आयेगा तथा हमारी अर्थव्यवस्था में कालाधन व भ्रष्टाचार खत्म होने तथा एफ.डी.आई. बढ़ने से हमारी अर्थव्यवस्था विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली होगी तथा देश में रोजगार के अवसर सारी दुनियाँ में सबसे ज्यादा होंगे तथा इस कर (टैक्स) प्रणाली से गांव का पैसा पहले गांव में ही लगेगा क्योंकि इस प्रणाली में टैक्स का पैसा नीचे से ऊपर जायेगा। वर्तमान अव्यावहारिक कर प्रणाली में तो पैसा पहले ऊपर जाता है और लुटते-लुटते नीचे आता है और अन्तिम व्यक्ति तक पहुँच ही नही पाता है।

प्रश्न– इस नई कर प्रणाली में टैक्स चोरी की सम्भावना कितनी होगी?

उत्तर– इस नई कर प्रणाली B.T.T. में टैक्स चोरी की सम्भावना 99% नहीं होगी। क्योंकि इस टैक्स प्रणाली में पैसा टैक्स कटकर ही बैंक के खातें में जमा होगा।

आर्थिक आजादी से लेकर सम्पूर्ण क्रान्ति के हमारे मुद्दे मात्र मिथ्या कल्पना या सुहाना सपना नहीं हैं। ये तर्क, तथ्य व सत्य पर आधारित हैं। यदि दुनिया का कोई भी अर्थशास्त्री, राजनेता, बुद्धिजीवी या विचारक इन मुद्दों को झूठा साबित करता है तो हम उसे करोड़ों रुपये का मुहमांगा ईनाम या पुरस्कार देंगे।

2. **गांवों को न्याय दिलाकर दरिद्र भारत को उठाना –** गाँव, गरीब, मजदूर, कारीगर, दलित व किसान को उनकी आबादी के अनुसार सत्ता व बजट में भागीदारी दिलाना तथा इनके श्रम के मूल्यांकन में चल रहे पक्षपात को मिटाकर इनको आर्थिक व सामाजिक न्याय दिलाना। आजादी की लड़ाई इन्हीं लोगों ने लड़ी। अत: पहले अंग्रेजों ने भूमि अधिग्रहण का कानून बनाकर तथा इन सबको अकुशल श्रमिक का दर्जा देकर इनका शोषण किया, वही काम आजाद भारत में भी हो रहा है, यह बहुत ही शर्मनाक है। हम सब के पूर्वज मूलत: गांववासी थे, भारत की आत्मा गांवों में बसती है। हमें साइनिंग इंडिया व दरिद्र भारत के बीच की दीवार को मिटाना है।
3. **समान शिक्षा व्यवस्था –** भारतीय भाषाओं में उच्च आध्यात्मिक मूल्यों व संस्कारों के साथ सबको नि:शुल्क समान शिक्षा का मौलिक अधिकार मिलना चाहिए। ऐसा होने से देश के बच्चे चरित्रवान् होंगे, वे देश के गद्दार न बनकर सच्चे पहरेदार बनेंगे। जर्मनी, फ्रांस, चीन व जापान की तरह अपनी भाषाओं में शिक्षा व्यवस्था होने पर गाँव, गरीब, मजदूर व किसान के बच्चे को भी डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, आई.ए.एस. व आई.पी.एस. बनने का अवसर मिलेगा। हम आधुनिकता, विकास, विज्ञान एवं

तकनीकी के विरोधी नहीं हैं, लकिन हम चाहते हैं कि अंग्रेजी के समानान्तर अपनी भाषा में विज्ञान एवं तकनीकी आदि की शिक्षा हो।

4. **समान चिकित्सा व्यवस्था** – 84 करोड़ लोग जो विकास की मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं, उन सबको एक जैसे हॉस्पिटलों में नि:शुल्क उपचार तो मिलना ही चाहिए। क्या जिन्दा रहने या इलाज कराने का अधिकार केवल अमीर लोगों को ही है? सरकारी आंकड़ों के अनुसार भी लगभग 65 से 70% लोग तो बीमार होने के बाद ऐलोपैथी का महंगा इलाज ही नहीं करा पाते तथा जो 30 से 35% लोग इलाज कराते हैं, उनमें से 50% लोग कर्ज लेकर अथवा घर या जमीन बेचकर इलाज करा पाते हैं। लगभग 70% लोग परम्परागत तरीके से भी अपना इलाज कर सकते हैं। भारतीय चिकित्सा पद्धतियों से हमारे 90% से 99% रोगों का उपचार हो सकता है, इस पर व्यापक शोध व अनुसंधान होना चाहिए।

5. **चुनाव सुधार** – स्टेट फन्डिंग इलैक्शन (राज्य वित्तपोषित चुनाव), अनिवार्य मतदान, एक साथ मतदान व प्रधानमंत्री का जनता से सीधा चुनाव। चुनाव सुधार होने से योग्य व निष्कलंक लोग विधानसभा व संसद में पहुँच पायेंगे और लोकतन्त्र, लूटतन्त्र बनने से बच जायेगा। संसद में बैठकर लोग राष्ट्रहित में उचित कानून बनायेंगे तथा टैक्स का पैसा पूरी ईमानदारी से देश के विकास में लगेगा।

6. **राष्ट्रीय प्रबन्धन नीति** – जल-प्रबन्धन, कचरा-प्रबन्धन, ई-गवर्नेंस प्रबन्धन, राष्ट्रीय सम्पदा प्रबन्धन की नई नीति व जनसंख्या नियन्त्रण की ठोस नीति आदि के द्वारा व्यवस्था को पारदर्शी व न्यायपूर्ण बनाकर देश को सर्वांगीण रूप से विकास के शिखर पर ले जाना।

7. **काले कानून खत्म करवाना** – भूमि अधिग्रहण कानून को तुरन्त खत्म करवाना तथा शराब बन्दी का कानून बनवाकर देश को बचाना। इसी प्रकार महात्मा गांधी जी के सपनों के अनुसार अंग्रेजों के वक्त के बने 34,735 काले कानूनों में आंशिक व पूर्ण रूप से बदलाव करवाकर सच्चे कानून का राज देश में स्थापित करना। **जिस देश की कानून व्यवस्था व आर्थिक नीतियाँ ठीक होती हैं, उस देश में किसी भी तरह के अपराध, हिंसा व अशांति तथा गरीबी नहीं रह सकती। भारत को तत्काल एक नई अर्थक्रान्ति व कानून क्रान्ति की नितान्त आवश्यकता है।**

व्यवस्था-परिवर्तन की आवश्यकता क्यों? – स्वतन्त्र भारत में गुलामी के वक्त से चल रहे विदेशी तंत्र के कारण 1% पूंजीवादी व कुछ भ्रष्ट लोग देश व देश की सभी राष्ट्रीय सम्पदाओं एवं देशवासियों को लूट रहे हैं, 10% लोग वर्तमान शासन व्यवस्था में आंशिक रूप से लाभान्वित हो रहे हैं तथा लगभग 90% लोगों के साथ पूर्णरूप से घोर अन्याय व शोषण हो रहा है।

प्रश्न– भारत स्वाभिमान के तीन मुद्दे, आर्थिक आजादी या व्यवस्था-परिवर्तन की ये नीतियाँ देश में कैसे लागू होंगी?
कैसे होगी यह सम्पूर्ण क्रान्ति?

उत्तर– 1. वर्तमान केन्द्र सरकार– लोकतन्त्र में ये सभी कार्य करने का एकमात्र अधिकार संसद के पास है। अत: वर्तमान केन्द्र सरकार इसको करे।

2. **विपक्ष–** यदि वर्तमान सरकार नहीं करती है तो पूरा विपक्ष एकजुट होकर इन मुद्दों को उठायें, सड़क से संसद तक सरकार पर दबाव डालें। संसद तब तक नहीं चलने दे जब तक सरकार इन मुद्दों या नीतियों को लागू नहीं करे तथा अन्त में, यदि फिर भी वर्तमान सरकार इन कार्यों को नहीं करती तो फिर पूरा विपक्ष इन मुद्दों को लेकर अगले चुनाव में जनता के बीच जाए तथा जनता इन लोगों को जिताए और जिताने के बाद उनसे इन कार्यों को करवाए।

3. **जनता–** लोकतन्त्र में एक जुमला है "जनता जिसकी जीत उसकी"। लोकशाही में तानाशाही नहीं चलने दे। सब देशवासी जो जहां हैं–गांव, गरीब, मजदूर, किसान, हिन्दु, मस्लिम, सिख व ईसाई सभी लोग इन मुद्दों एवं इस व्यवस्था परिवर्तन की चर्चा करें। पुराने लोग चौपालों में, नए लोग फेस बुक, ब्लॉग, एस.एम.एस., ई-मेल पर संदेश लिखकर, आम लोग खेतों, घरों, फैक्ट्रियों, स्कूल, कॉलेज व अन्य संस्थानों में, जहां भी रहें, जहां भी बैठें, जहां भी जाएं वहीं इस आर्थिक आजादी, आर्थिक लोकतन्त्र, आर्थिक न्याय एवं व्यवस्था-परिवर्तन की क्रान्ति की आवाज उठाएं एवं एक जनमत व वातावरण तैयार करें और अन्त में सब देशवासी, देश की जनता ये तय कर ले कि अब हम वोट उसी व्यक्ति या पार्टी को देंगे जो ये परिवर्तन करेगा, जो हमें आर्थिक आजादी देकर हमें हमारा अधिकार देगा। हम वोट उसी को ही देंगे जो हमारी आध्यात्मिक परम्पराओं की रक्षा करेगा। सभी राजनैतिक पार्टियों को अपने चुनावी घोषणा-पत्रों में इन मुद्दों को सम्मिलित करना पड़ेगा और संसद में ये नई नीतियाँ व कानून बनाने पड़ेंगे तथा इन मुद्दों को क्रियान्वित करने पड़ेंगे।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज हम हिन्दु या मुसलमान आदि अपने जाति या महजब के कारण या पूर्वजन्म के किसी कर्म के कारण गरीब नहीं हैं अपितु देश की गलत आर्थिक नीतियों व कानूनों के कारण हम दरिद्र हैं और हमारे साथ अन्याय, शोषण हो रहा है।

देश के ही कुछ भ्रष्ट, बेईमान व गद्दार लोग कालेधन के रूप में 400 लाख करोड़ रुपये लूट चुके हैं तथा अभी भी ये लूट जारी है और दूसरी तरफ देश के लगभग 84 करोड़ लोग गरीबी, भूख, अभाव, अपमान व बेबसी की जिन्दगी जी रहे हैं। अभी भी नहीं जगे तो कब जगेंगे?

हर वर्ष रोगों में 10 लाख करोड़ रुपये रुपये से अधिक नशों में भी लगभग 10 लाख करोड़, साथ ही विदेशी कम्पनियों के द्वारा भी लगभग 10 लाख करोड़ रुपये की आर्थिक लूट हो रही है। अब भी खुद को व देश को नहीं बचायेंगे तो ये पूरा देश लुट जायेगा।

कार्यकर्त्ता क्या करें?

1. **योग सेवा करें–** योग से देश को रोग, नशा व विदेशी कम्पनियों के लूट के षड्यन्त्र से बचाकर व्यक्ति निर्माण, चरित्र निर्माण व राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिदिन 1 से 2 घण्टे का समय राष्ट्रसेवा में लगाएँ अथवा पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता बनकर पूरा जीवन ही इस पवित्र परिवर्तन में लगाकर 121 करोड़ भारतीयों को ऊपर उठाने व सुख पहुँचाने में लगाकर तथा निरन्तर दूसरों को भी कार्यकर्त्ता बनाकर इस व्यक्ति-निर्माण एवं राष्ट्र-निर्माण के अनुष्ठान से जोड़ें।

2. **तीन व्रतों का पालन करें– योगव्रती, स्वदेशीव्रती व स्वाभिमानव्रती बनें।** योग करने वाला व्यक्ति रोग, नशा व अज्ञानादि सब विकारों से मुक्त रहकर उच्च चेतना से युक्त होकर जीता है। स्वदेशी को अपनाने से देश का धन देश में रहेगा, देश धनवान या आर्थिक महाशक्ति बनेगा तथा गांवों, गरीबों का उत्थान होगा।

   स्वाभिमानव्रती होकर जहां भी हों वही प्रतिदिन नए-नए लोगों से जगह-जगह जाकर भारत स्वाभिमान के मुख्य तीन मुद्दों व आर्थिक आजादी के सिद्धान्त से व्यवस्था-परितर्वन की के लिए जनमत या वातावरण तैयार करें। इसे सर्वोच्च प्राथमिकता दें।

3. **प्रातःकाल ध्यान व दर्शन करें–** प्रतिदिन उठते ही भगवान्, मातृभूमि, माता-पिता, अपने पूर्वज ऋषि-मुनियों व गुरुजनों का ध्यान करें तथा उनके स्वरूप का स्वयं में दर्शन करें, इससे आप सच्चे ईश्वर पुत्र, भारत माता की सन्तान, राष्ट्रभक्त, मातृ-पितृ भक्त एवं सच्चे ऋषिपुत्र बनकर आलस्य, अज्ञान, संशय या भ्रमादि से मुक्त रहकर प्रतिपल व प्रतिदिन ऊर्जा, उत्साह, सुख, शान्ति, संतुष्टि व आनन्द से भरा हुआ जीवन जीयें।

✎ यदि एक प्रतिशत लोग भी इस दिव्य परिवर्तन के कार्य को अपने जीवन की सर्वोच्च प्राथमिकता बनाकर तीव्र अभीप्सा (बर्निंग डिजायर) से कार्य करेंगे तो व्यक्ति-निर्माण व राष्ट्र-निर्माण का कार्य शीघ्र ही अवश्य पूरा होगा। मुझे तो इससे बड़ा या महान् कार्य या उद्देश्य दूसरा कुछ भी नहीं लगता। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि परिवर्तन की ये अग्नि प्रत्येक भारतीय के हृदय में अखण्ड प्रज्वलित रहे।

✎ **दुर्भाग्य–**आजादी के इन 64 वर्षों में विकास के मूलभूत बुनियादी 9 मुद्दों–रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, बिजली, पानी व सड़क, इनमें देश के चालाक नेताओं ने लगभग 84 करोड़ लोगों को तो रोटी से आगे सोचने ही नहीं दिया।

दिव्य परिवर्तन की राष्ट्र सेवा में आपका योगदान –

प्रतिदिन एक घण्टा या सप्ताह में एक दिन इस परिवर्तन के लिए समय निकालें। आप एक सक्रिय अथवा पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता बनकर इस राष्ट्रयज्ञ में सेवा दें।

कुछ ज्वलन्त प्रश्न सम्पूर्ण देश में उठने चाहिएँ–

- क्या देश का लूटा हुआ 400 लाख करोड़ रुपये का धन देश को नहीं मिलना चाहिए?
- क्या भ्रष्टाचार खत्म नहीं होना चाहिए?
- जब मात्र 2% टांजेक्शन टैक्स लगाकर देश का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है तथा महंगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार व कालेधन पर काबू पाया जा सकता है, तो क्या टैक्स के नाम पर चल रही लूट खत्म नहीं होनी चाहिए?

- क्या सबको शिक्षा व चिकित्सा का समान अधिकार नहीं मिलना चाहिए?
- क्या जल-प्रबन्धन, कचरा-प्रबन्धन, राष्ट्रीय सम्पदा-प्रबन्धन व जनसंख्या नियन्त्रण आदि की एक ठोस राष्ट्रीय रणनीति नहीं बननी चाहिए?
- क्या भूमि अधिग्रहण कानून के कारण किसानों के साथ हो रहा घोर अन्याय समाप्त नहीं होना चाहिए?
- क्या गाँवों, गरीबों, मजदूरों, कारीगरों, दलितों व किसानों को उनकी आबादी के अनुसार सत्ता में भागीदारी नहीं मिलनी चाहिए तथा उनके श्रम के मूल्यांकन में हो रहा पक्षपात खत्म नहीं होना चाहिए?
- सब देशवासी नेताओं से पूछें कि जब मात्र 2% टैक्स लगाकर देश का सम्पूर्ण विकास हो सकता है तो अनावश्यक रूप से 32 प्रकार के टैक्स लगाकर हमें क्यों लूट रहे हो?
- जब 400 लाख करोड़ रुपये का कालाधन लाकर देश को दुनियाँ की सर्वोच्च आर्थिक महाशक्ति बना सकते हैं, तो हमारा देश का लूटा हुआ धन देश में वापस क्यों नहीं लाते हो?

एक तरफ देश के कुछ गद्दार व बेईमान लोग जिन्होंने देश को बेरहमी से लूटा है, उनके साथ लगे ड्रग माफिया, विदेशी कम्पनियाँ तथा साथ ही वो देश जहाँ इन भ्रष्ट लोगों का काला पैसा जमा है तथा दुनियाँ के वे लोग, जिनको एक संन्यासी व भारतीय संस्कृति की विश्व पटल पर गौरवमयी प्रतिष्ठा रास नहीं आती ऐसी तमाम आसुरी शक्तियाँ एक षड्यन्त्र के तहत संन्यास व संस्कृति के गौरवमय पुरुष व इस पवित्र आन्दोलन को बदनाम करने की नापाक कोशिश कर रही हैं। क्या इसलिए कि संन्यासी एक आम किसान परिवार में अनपढ़ माँ-बाप के यहां साधारण से घर में पैदा हुआ? क्या एक आम आदमी व योगी संन्यासी को सच कहने की इजाजत नहीं है?

यदि आप चाहते हैं कि ये अन्याय, अधर्म व पाप खत्म होना चाहिए तो आप भी अभी व आज से ही इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने में पूरी ताकत लगाईये व देश को बचाने के लिए आगे आईये!

परम पूज्य स्वामी जी महाराज के भारत स्वाभिमान आन्दोलन पर प्रतिदिन नये-नये विचार जानने, आर्थिक आजादी से व्यवस्था-परिवर्तन, कालेधन का पूरा सच, योग संदेश, जीवन-दर्शन, व्यवस्था- परिवर्तन, अग्नि-पत्र पढ़ने के लिए हमारी हिन्दी वेबसाइट www.bharatswabhimantrust.org एवं आस्था पर कार्यक्रम देखें। अभियान से जुड़ने व नई जानकारी प्राप्त करने के लिए 02233081122 पर मिस कॉल करें।

राष्ट्र-निर्माण के इस यज्ञ को आगे बढ़ाने के लिये इस पत्रक को राष्ट्रभाषा व अन्य भारतीय भाषाओं में छपवाकर दानस्वरूप गाँव-गाँव व घर-घर वितरित करें तथा वितरक के रूप में आप अपना या अपने संस्थान का नाम प्रकाशित कर सकते हैं।